गरीबी के लिये जिम्मेदार कौन।।

धनिखाहों की आमदनी में दिन दुनी रात चौगुनी बढोतरी और गरीबों की उसी गति से बढती दीनता को देखकर सवाल उठने लगा है कि आखिरकार गरीबों के पतन के लिये जिम्मेदार कौन है सरकार समाजिक असमानता ,खेत अथवा उद्योग धंधों के मालिक ।गरीब के घर पैदा होने वाले बच्चे को दो जुन की रूखी सूखी रोटी मय्यसर नही होती ।गरीब का बच्चा जैसे ही चलने फिरने की स्थिति में आता है तो वह भी मां बाप के साथ रोटी के लिये संघर्परत् हो जाता है ।दूसरी तरफ अमीर का बच्चा ऐश आराम में पलता है।पढ लिखकर गद्दी सम्भाल लेता है । गरीब और गरीब का परिवार दिन भर की हाडफोड मेहनत के बाद रोटी का इन्तजाम बडी मुश्किल से कर पाता है वही दूसरी ओर अमीर का बेटा दौलत का पहाड जोड लेता हैं। सफेदपोश तो और भी तीव्रगति से रिकार्ड बनाने लगे है ।ऐसी कौन सी मशीन इन पहाड खडा करने वालों के हाथ लग जाता है कि वे दौलत के पहाड पर खडा होकर मुस्कराते हैं । गरीब आमजन रोटी के लिये हाडफाड मेहनत के बाद तंगहाल बसर करने को मजबूर है । आज हमारे सामने चिन्तन एवं शोध का विपय हो गया है गरीब और भूख ।

आज के इस युग में समाज सेवा का भाव लुप्त हो रहा है । समाज सेवा का भाव वास्तव में महात्मा गांधी और डां अम्बेडकर में था । वे ही समाज सेवा के लिये जीये । बाबा साहेब ने तो सामाजिक अश्पृश्यता का जहर पीकर भी गरीबों दीन वंचितों के लिये ही जीये । उनका जीवन ही दीन वंचितों को समर्पित रहा । दुर्भाग्यबस देश और जनता की सेवा की कसम खाने वाले ही भ्रप्टाचार,घोटाला,कबूरबाजी जैसे घिनौने कार्य में लिप्त पाये जा रहे हैं ,क्षेत्रवाद फैला रहे है । एक राज्य से दूसरे राज्य में रोटी रोजी की तलाश पर रोक लगाने को उत्सुक है जबकि देश के निवासी को देश के किसी भूभाग पर बसने और रोटी रोजी कमाने का अधिकार होना चाहिये दूसरी ओर व्यापारी मिलावट ,नफाखोरी में लगा हुआ है उद्योगपति भी पीछे नही नजर आते ।दरिद्र की बढती दरिद्रता और अमीर का खडा होता धन दौलत का खडा पहाड देखकर सवाल उठता है सही मायने में गरीबी के लिये जिम्मेदार कौन हैं और देश के गरीबों का उध्दार कैसे हो ।क्या लोकतन्त्र के पहरेदार ऐसे ही सफेद को काला करते रहेगे ।उद्योगपति,व्यापारी धन दौलत पहाड खडा करते रहेगे । सफेदपोश विदेशी बैंको में धन भरते रहेगे । क्या गरीबी को सरकार काबू में कर पायेगी ।क्या गरीबो का उध्दार प्रजातन्त्र के युग में हो पायेगा ।क्या लालफीताशाही गरीबों का साधन सम्पन्न बनाने में समर्थ होगी । क्या बेरोजगारी भत्ता और वजीफा भर से देश का युवा जीवन यापन कर पायेगा । सही मायने में गरीबी उन्मूलन में सामाजिक असमानता और आर्थिक/उद्योग/ व्यापार/धंधे का केन्द्रीकरण गरीबी को हवा देने में सहायक साबित हो रहा है । इस हवा का रूख सरकार बदल सकती है पर सरकार चलाने वाले अपने दायित्व का निर्वहन ईमानदारी के साथ देश और समाज के हित में करें ।

इन प्रश्नो पर गौर किया जाये तो उत्तर नकारात्मक मिलता है ।सच तो ये है कि गरीबी के लिये जिम्मेदार नीति ,नीति निर्धारक और सामाजिक कुव्यवस्था का मजबूत हाथ भी हैं ।गरीबी के चक्रव्यूह को सरकार तो तोड सकती है पर इस सरकार में शामिल लोग सबसे पहले अपना स्वार्थ देखते है ।जनता का ख्याल तो उन्हे सिर्फ चुनाव के वक्त आता है । सुक्ष्म चिन्तन किया जाये तो गरीबी के लिये हमारी सरकार काफी हद तक जिम्मेदार है क्योंकि वह भ्रप्टाचार,घोटाला,नफाखोरी मिलावट महंगाई को रोक नही पा रही है और ये आर्थिक अपराध गरीबी से उबरने नही दे रहे है । गरीब ही नही देश भी गरीबी कर्ज के दलदल में फसता जा रहा है । सरकार को इस तरह के अपराधो पर शिकंजा कसना चाहिये । हर हाथ को रोजगार मिले ऐसे प्रावधान होने चाहिये । मालिको उद्योगपतियों को भी चाहिये कि वे गरीब मजदूरों की मदद करें । इस मदद से गरीब मजदूर का ही भला नही होगा, उद्योगपति और देश को भी लाभ होगा । मालिक लोग मजदूरो को चिकित्सा सुविधा दे,बीमा सुविधा दे। जो मजदूर अशिक्षित और खेत मालिकों के खेतो में काम कर रहे है उन्हे भी मूलभूत सुविधाये मिले और मालिक मजदूर के बीच खडी दीवार को तोडे । मजदूरों से सीधे संवाद स्थापित करे । इससे मानवीय रिश्ते को मजबूती मिलेगी और यह मजबूती

उद्योग और उद्योगपति के लिये फायदेमंद साबित होगी और मजदूर अपने को अलग नही समझेगा ।वह लाभ /हानि के मुद्दो पर भी चिन्तन करेगा ।

सरकार भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को खेती करने की जमीन उपलब्ध कराये ।पढे लिखे बेरोजगारों को छोटे बडे उद्योग धंधों की स्थापना करने एवं उनके संचालन के लायक शिक्षा दी जाये। कमजोर वर्ग के छात्रो को छात्रवृत्ति की राशि में बढोतरी की जाये ताकि वे पढ लिख कर रोजगार धंधा में लग सके और देश की तरक्की में सहभागी बने । छात्रवृत्ति खासकर गरीब तबके शिक्षार्थियों के लिये वरदान साबित होती है । रोजगारोन्मुखी शिक्षा दी जाये ।ग्रामीण स्तर तक प्रोफेशनल्स इजुकेशन की पहुंच हो जिससे गांव के होनहार शिक्षा प्राप्त कर विकास की धारा से जुड सके ।यदि युवा शक्ति नव निर्माण एवं रोटी /रोजी से जुड गयी तो गरीबी का उन्मूलन सुनिश्चित है ।

समाज भूमण्डलीयकरण के युग में सामाजिक परिवर्तन में आगे आये। सामाजिक सोच में बदलाव भी गरीबी उन्मूलन में काफी हद तक मददगार साबित हो सकता है । वर्तमान युग में भी सामाजिक परिवर्तन की अत्यन्त आवश्यकता हैं । धार्मिक जातीय फंसाद भी गरीबी के लिये जिम्मेदार है,इसलिये सामाजिक समानता स्थापित हो ।चीन जैसे देश के लिये जनसंख्या अभिशाप नही है तो हमारे देश के लिये क्यों ६ देश में हर क्षेत्र में सम्भावनाये विद्यमान है चाहे वे कृपि का क्षेत्र हो या उद्योग का या अन्य कोई क्षेत्र ।देश के धनाढ्यों चाहे तो गरीबी का उन्मूलन हो सकता है।इस सम्भावना पर सरकार को बारीकी से विचार करना होगा । यदि देश से गरीबी मिट गयी और सामाजिक समानता का साम्राज्य स्थापित हो गया तो आतंकवाद जैसी महामारी का खतरा भी टल सकता है ।रोजगार प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने की दशा में बन्दूक थामने वाले हाथ असामाजिक तत्वों से हाथ मिलाने वाले हाथ रोजगार अपनायेगे । बन्दूक नही थामेगे । असामाजिक तत्वों के कुचक्र के शिकार नही होगे । सामाजिक बुराईया बार बार सिर नही उठायेगी । सरकार को ठोस कदम उठाने होगे । सामाजिक एवं आर्थिक पहलूओं पर विचार मंथन के साथ राजनैतिज्ञ दृढ इच्छा शक्ति का भी परिचय देना होगा । यदि सरकार सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिज्ञ कारको में समन्वय स्थापित कर गरीबी उन्मूलन का महासमर नही जीत पायी तो इस आरोप से नही बच पायेगी कि सही मायने मे सरकार ही गरीबी के लिये है ।